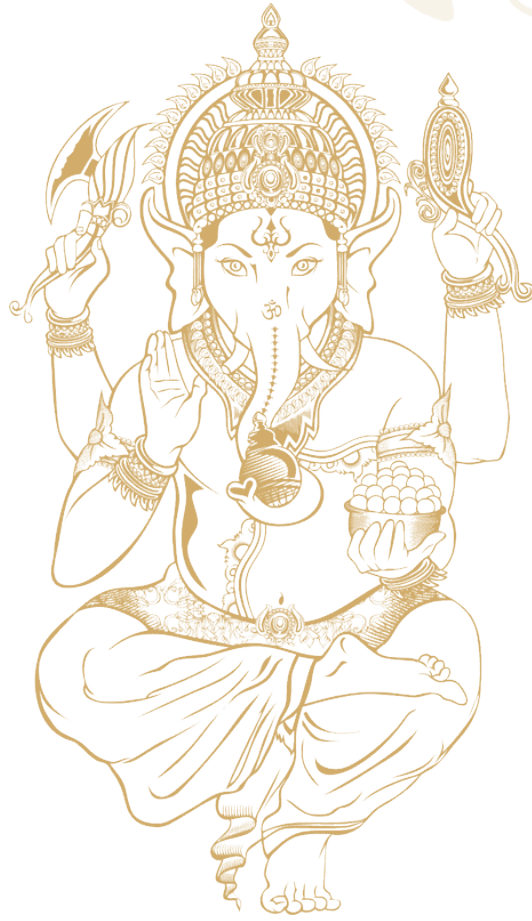




Mr.dilip agwar

09 Jul 1991

05:45 AM

Bagru

Model: Web-MyKundli

Order No: 120425801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 09/07/1991
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 05:45:45 घंटे
इष्ट _____: 00:13:11 घटी
स्थान _____: Bagru
राज्य _____: Rajasthan
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:49:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:36:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:27:36 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 05:18:09 घंटे
वेलान्तर _____: -00:05:05 घंटे
साम्पातिक काल _____: 00:23:55 घंटे
सूर्योदय _____: 05:40:28 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:24:42 घंटे
दिनमान _____: 13:44:14 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 22:35:00 मिथुन
लग्न के अंश _____: 22:52:15 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मिथुन - बुध
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: रोहिणी - 1
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: गण्ड
करण _____: तैत्तिल
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: गरुड़
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: ओ-ओमप्रकाश
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1913	आषाढ़	18
पंजाबी	संवत : 2048	आषाढ़	25
बंगाली	सन् : 1398	आषाढ़	24
तमिल	संवत : 2048	आनी	25
केरल	कोल्लम : 1166	मिथुनम	24
नेपाली	संवत : 2048	आषाढ़	25
चैत्रादि	संवत : 2048	आषाढ़	कृष्ण 12
कार्तिकादि	संवत : 2048	ज्येष्ठ	कृष्ण 12

पंचांग

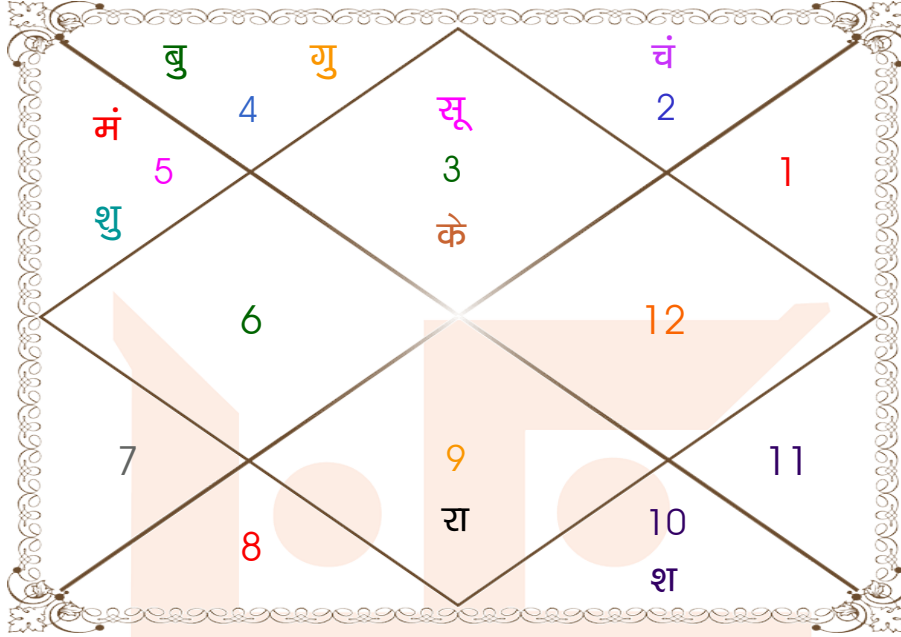
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 12
 तिथि समाप्ति काल _____ : 11:24:21
 जन्म तिथि _____ : 12
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : रोहिणी
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 21:55:25 घंटे
 जन्म योग _____ : रोहिणी
 सूर्योदय कालीन योग _____ : गण्ड
 योग समाप्ति काल _____ : 17:02:52 घंटे
 जन्म योग _____ : गण्ड
 सूर्योदय कालीन करण _____ : तैतिल
 करण समाप्ति काल _____ : 11:24:21 घंटे
 जन्म करण _____ : तैतिल
 भयात _____ : 13:34:23
 भोग _____ : 53:58:33
 भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 7 वर्ष 6 मा 1 दि

घात चक्र

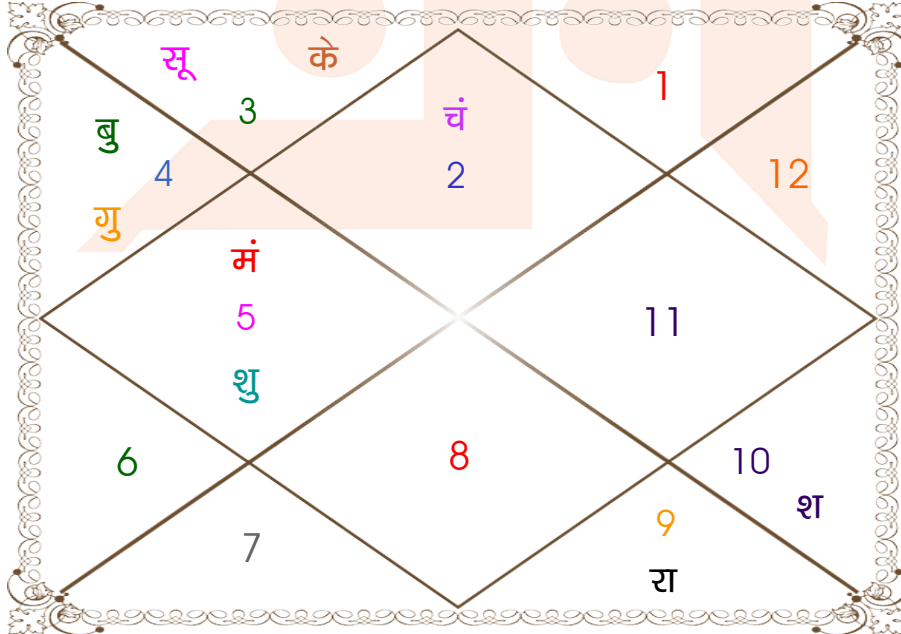
मास _____ : मार्गशीर्ष
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : हस्त
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : शकुनि
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : सर्प
 लग्न _____ : वृष
 सूर्य _____ : वृश्चिक
 चन्द्र _____ : कन्या
 मंगल _____ : धनु
 बुध _____ : कन्या
 गुरु _____ : मकर
 शुक्र _____ : मकर
 शनि _____ : तुला
 राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

		चं	के ल सू
			गु बु
श			शु मं
रा			

लग्न कुंडली

के सू	चं		
गु बु	ल		
मं		श	
शु		रा	

विंशोत्तरी
चन्द्र 7वर्ष 6मा 1दि
चन्द्र

09/07/1991

09/01/2109

चन्द्र	08/01/1999
मंगल	08/01/2006
राहु	08/01/2024
गुरु	08/01/2040
शनि	08/01/2059
बुध	08/01/2076
केतु	08/01/2083
शुक्र	09/01/2103
सूर्य	09/01/2109

योगिनी
सिद्धा 5वर्ष 3मा 0दि
सिद्धा

08/10/2025

08/10/2032

सिद्धा	17/02/2027
संकटा	08/09/2028
मंगला	18/11/2028
पिंगला	09/04/2029
धान्या	08/11/2029
भ्रामरी	19/08/2030
भद्रिका	09/08/2031
उल्का	08/10/2032



FUTUREPOINT
Astro Solutions



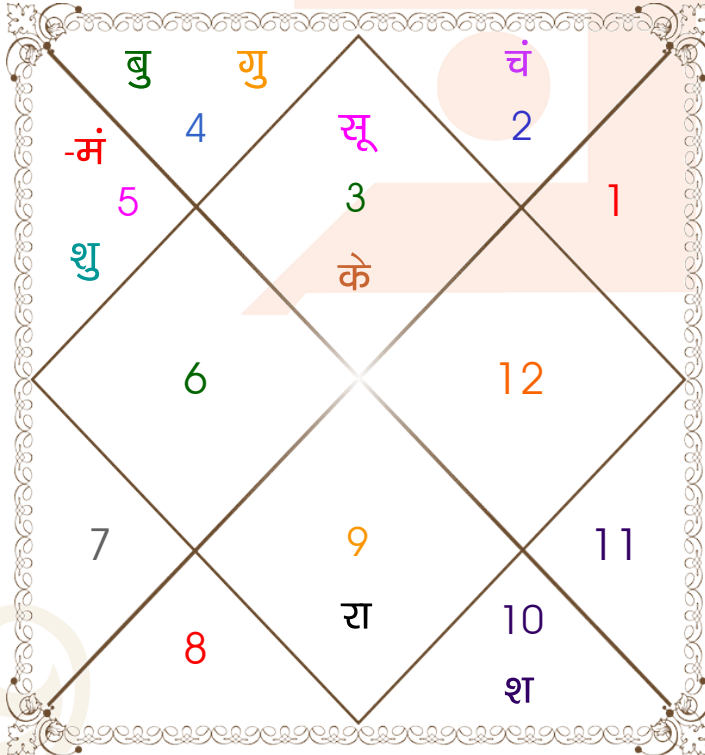
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	22:52:15	314:23:29	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	---
सूर्य			मिथु	22:35:00	00:57:14	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	सम राशि
चंद्र			वृष	13:19:46	14:45:19	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	मूलत्रिकोण
मंगल			सिंह	02:16:00	00:36:38	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	मित्र राशि
बुध			कर्क	14:13:07	01:35:26	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	शत्रु राशि
गुरु			कर्क	22:13:49	00:12:13	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	चंद्र	उच्च राशि
शुक्र			सिंह	04:50:46	00:39:39	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगल	शत्रु राशि
शनि	व		मक	11:04:01	00:04:06	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	स्वराशि
राहु	व		धनु	25:12:07	00:00:18	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	नीच राशि
केतु	व		मिथु	25:12:07	00:00:18	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	नीच राशि
हर्ष	व		धनु	17:53:42	00:02:25	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	मंगल	---
नेप	व		धनु	21:36:38	00:01:37	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
प्लूटो	व		तुला	23:55:47	00:00:39	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
दशम भाव			मीन	12:46:29	--	उ०भाद्रपद	--	26	गुरु	शनि	मंगल	--

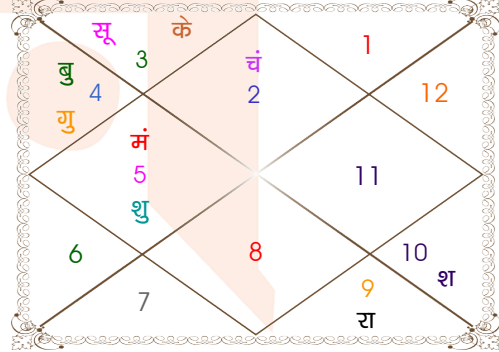
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:44:35

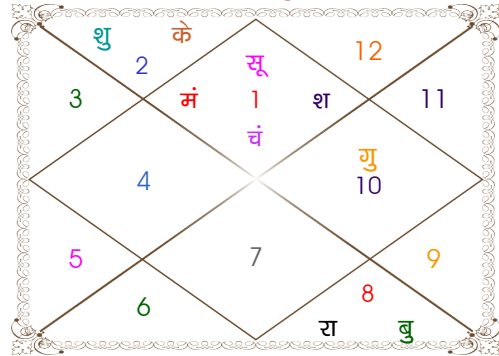
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 06:11:17	मिथुन 22:52:15
2	कर्क 06:11:17	कर्क 19:30:19
3	सिंह 02:49:22	सिंह 16:08:24
4	सिंह 29:27:27	कन्या 12:46:29
5	कन्या 29:27:27	तुला 16:08:24
6	वृश्चिक 02:49:22	वृश्चिक 19:30:19
7	धनु 06:11:17	धनु 22:52:15
8	मकर 06:11:17	मकर 19:30:19
9	कुम्भ 02:49:22	कुम्भ 16:08:24
10	कुम्भ 29:27:27	मीन 12:46:29
11	मीन 29:27:27	मेष 16:08:24
12	वृष 02:49:22	वृष 19:30:19

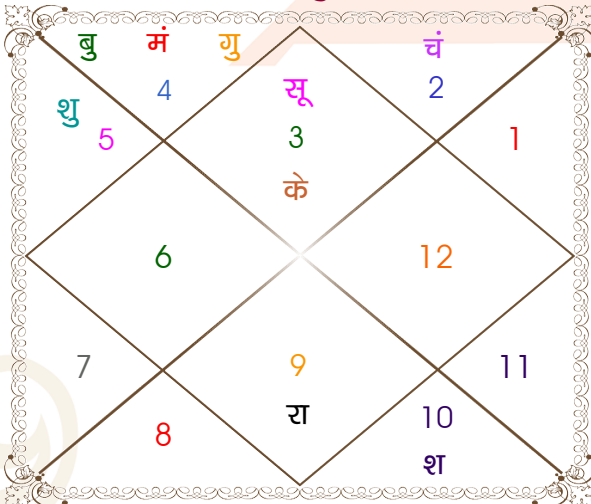
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	22:52:15
2	कर्क	16:01:34
3	सिंह	12:02:45
4	कन्या	12:46:29
5	तुला	17:17:18
6	वृश्चिक	21:36:25
7	धनु	22:52:15
8	मकर	16:01:34
9	कुम्भ	12:02:45
10	मीन	12:46:29
11	मेष	17:17:18
12	वृष	21:36:25

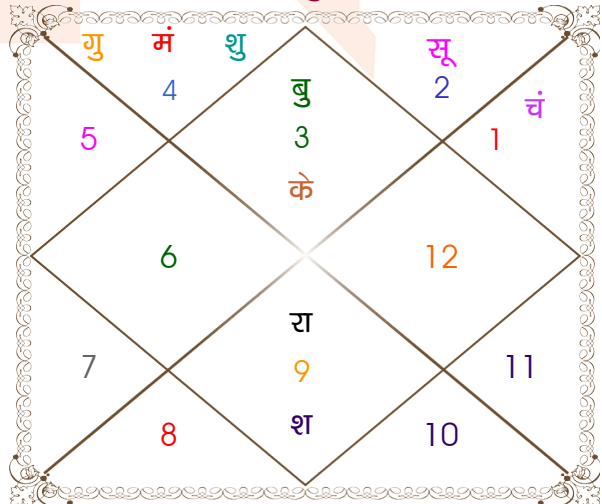
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 7 वर्ष 6 मास 1 दिन

चंद्र 10 वर्ष 09/07/1991 08/01/1999	मंगल 7 वर्ष 08/01/1999 08/01/2006	राहु 18 वर्ष 08/01/2006 08/01/2024	गुरु 16 वर्ष 08/01/2024 08/01/2040	शनि 19 वर्ष 08/01/2040 08/01/2059
00/00/0000	मंगल 06/06/1999	राहु 20/09/2008	गुरु 26/02/2026	शनि 11/01/2043
09/07/1991	राहु 24/06/2000	गुरु 14/02/2011	शनि 08/09/2028	बुध 20/09/2045
राहु 09/12/1991	गुरु 31/05/2001	शनि 21/12/2013	बुध 15/12/2030	केतु 30/10/2046
गुरु 09/04/1993	शनि 10/07/2002	बुध 09/07/2016	केतु 21/11/2031	शुक्र 30/12/2049
शनि 08/11/1994	बुध 07/07/2003	केतु 28/07/2017	शुक्र 22/07/2034	सूर्य 12/12/2050
बुध 09/04/1996	केतु 03/12/2003	शुक्र 27/07/2020	सूर्य 10/05/2035	चंद्र 12/07/2052
केतु 08/11/1996	शुक्र 01/02/2005	सूर्य 21/06/2021	चंद्र 08/09/2036	मंगल 21/08/2053
शुक्र 10/07/1998	सूर्य 09/06/2005	चंद्र 21/12/2022	मंगल 15/08/2037	राहु 27/06/2056
सूर्य 08/01/1999	चंद्र 08/01/2006	मंगल 08/01/2024	राहु 08/01/2040	गुरु 08/01/2059
बुध 17 वर्ष 08/01/2059 08/01/2076	केतु 7 वर्ष 08/01/2076 08/01/2083	शुक्र 20 वर्ष 08/01/2083 09/01/2103	सूर्य 6 वर्ष 09/01/2103 09/01/2109	चंद्र 10 वर्ष 09/01/2109 00/00/0000
बुध 06/06/2061	केतु 06/06/2076	शुक्र 10/05/2086	सूर्य 29/04/2103	चंद्र 09/11/2109
केतु 03/06/2062	शुक्र 06/08/2077	सूर्य 10/05/2087	चंद्र 28/10/2103	मंगल 10/06/2110
शुक्र 03/04/2065	सूर्य 12/12/2077	चंद्र 08/01/2089	मंगल 04/03/2104	राहु 10/07/2111
सूर्य 07/02/2066	चंद्र 13/07/2078	मंगल 10/03/2090	राहु 27/01/2105	00/00/0000
चंद्र 10/07/2067	मंगल 09/12/2078	राहु 10/03/2093	गुरु 15/11/2105	00/00/0000
मंगल 06/07/2068	राहु 27/12/2079	गुरु 09/11/2095	शनि 28/10/2106	00/00/0000
राहु 23/01/2071	गुरु 02/12/2080	शनि 08/01/2099	बुध 04/09/2107	00/00/0000
गुरु 30/04/2073	शनि 11/01/2082	बुध 09/11/2101	केतु 09/01/2108	00/00/0000
शनि 08/01/2076	बुध 08/01/2083	केतु 09/01/2103	शुक्र 09/01/2109	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 7 वर्ष 5 मा 25 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु 08/01/2024 26/02/2026	गुरु - शनि 26/02/2026 08/09/2028	गुरु - बुध 08/09/2028 15/12/2030	गुरु - केतु 15/12/2030 21/11/2031	गुरु - शुक्र 21/11/2031 22/07/2034
गुरु 21/04/2024 शनि 23/08/2024 बुध 11/12/2024 केतु 26/01/2025 शुक्र 04/06/2025 सूर्य 13/07/2025 चंद्र 16/09/2025 मंगल 01/11/2025 राहु 26/02/2026	शनि 22/07/2026 बुध 30/11/2026 केतु 23/01/2027 शुक्र 26/06/2027 सूर्य 12/08/2027 चंद्र 28/10/2027 मंगल 21/12/2027 राहु 08/05/2028 गुरु 08/09/2028	बुध 03/01/2029 केतु 21/02/2029 शुक्र 09/07/2029 सूर्य 19/08/2029 चंद्र 27/10/2029 मंगल 14/12/2029 राहु 17/04/2030 गुरु 06/08/2030 शनि 15/12/2030	केतु 04/01/2031 शुक्र 02/03/2031 सूर्य 19/03/2031 चंद्र 16/04/2031 मंगल 06/05/2031 राहु 26/06/2031 गुरु 10/08/2031 शनि 03/10/2031 बुध 21/11/2031	शुक्र 01/05/2032 सूर्य 19/06/2032 चंद्र 08/09/2032 मंगल 04/11/2032 राहु 30/03/2033 गुरु 07/08/2033 शनि 08/01/2034 बुध 26/05/2034 केतु 22/07/2034
गुरु - सूर्य 22/07/2034 10/05/2035	गुरु - चंद्र 10/05/2035 08/09/2036	गुरु - मंगल 08/09/2036 15/08/2037	गुरु - राहु 15/08/2037 08/01/2040	शनि - शनि 08/01/2040 11/01/2043
सूर्य 05/08/2034 चंद्र 30/08/2034 मंगल 16/09/2034 राहु 30/10/2034 गुरु 08/12/2034 शनि 23/01/2035 बुध 05/03/2035 केतु 22/03/2035 शुक्र 10/05/2035	चंद्र 20/06/2035 मंगल 18/07/2035 राहु 29/09/2035 गुरु 03/12/2035 शनि 18/02/2036 बुध 27/04/2036 केतु 25/05/2036 शुक्र 15/08/2036 सूर्य 08/09/2036	मंगल 28/09/2036 राहु 18/11/2036 गुरु 02/01/2037 शनि 25/02/2037 बुध 15/04/2037 केतु 05/05/2037 शुक्र 30/06/2037 सूर्य 17/07/2037 चंद्र 15/08/2037	राहु 24/12/2037 गुरु 20/04/2038 शनि 06/09/2038 बुध 08/01/2039 केतु 28/02/2039 शुक्र 24/07/2039 सूर्य 06/09/2039 चंद्र 18/11/2039 मंगल 08/01/2040	शनि 30/06/2040 बुध 03/12/2040 केतु 05/02/2041 शुक्र 07/08/2041 सूर्य 01/10/2041 चंद्र 01/01/2042 मंगल 06/03/2042 राहु 18/08/2042 गुरु 11/01/2043
शनि - बुध 11/01/2043 20/09/2045	शनि - केतु 20/09/2045 30/10/2046	शनि - शुक्र 30/10/2046 30/12/2049	शनि - सूर्य 30/12/2049 12/12/2050	शनि - चंद्र 12/12/2050 12/07/2052
बुध 31/05/2043 केतु 27/07/2043 शुक्र 07/01/2044 सूर्य 25/02/2044 चंद्र 17/05/2044 मंगल 13/07/2044 राहु 08/12/2044 गुरु 18/04/2045 शनि 20/09/2045	केतु 14/10/2045 शुक्र 20/12/2045 सूर्य 10/01/2046 चंद्र 12/02/2046 मंगल 08/03/2046 राहु 08/05/2046 गुरु 01/07/2046 शनि 03/09/2046 बुध 30/10/2046	शुक्र 11/05/2047 सूर्य 08/07/2047 चंद्र 12/10/2047 मंगल 19/12/2047 राहु 09/06/2048 गुरु 10/11/2048 शनि 12/05/2049 बुध 23/10/2049 केतु 30/12/2049	सूर्य 16/01/2050 चंद्र 14/02/2050 मंगल 06/03/2050 राहु 27/04/2050 गुरु 13/06/2050 शनि 07/08/2050 बुध 25/09/2050 केतु 15/10/2050 शुक्र 12/12/2050	चंद्र 29/01/2051 मंगल 04/03/2051 राहु 29/05/2051 गुरु 15/08/2051 शनि 14/11/2051 बुध 04/02/2052 केतु 09/03/2052 शुक्र 13/06/2052 सूर्य 12/07/2052

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	9
मित्र अंक	1, 3, 6, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

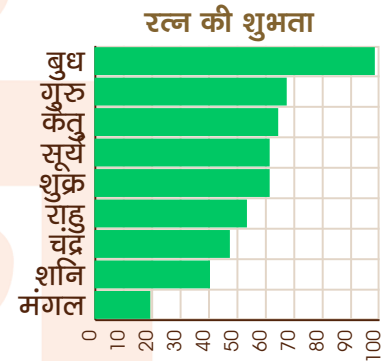


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	98%	धन, स्वास्थ्य, सुख
पुखराज	गुरु	67%	धन, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	64%	स्वास्थ्य, धन
माणिक्य	सूर्य	61%	स्वास्थ्य, पराक्रम
हीरा	शुक्र	61%	पराक्रम, कम खर्च, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	53%	दम्पति, धन
मोती	चंद्र	47%	व्यय, धन हानि
नीलम	शनि	40%	दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
मूंगा	मंगल	19%	पराक्रम हानि, हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	08/01/1999	67%	61%	19%	100%	67%	61%	40%	31%	52%
मंगल	08/01/2006	67%	55%	44%	86%	73%	61%	40%	31%	70%
राहु	08/01/2024	47%	22%	0%	98%	67%	67%	51%	66%	52%
गुरु	08/01/2040	67%	55%	31%	86%	80%	47%	40%	53%	64%
शनि	08/01/2059	47%	22%	0%	100%	67%	67%	57%	59%	52%
बुध	08/01/2076	67%	22%	19%	100%	67%	67%	40%	53%	64%
केतु	08/01/2083	47%	22%	31%	98%	67%	67%	15%	31%	77%
शुक्र	09/01/2103	47%	22%	19%	100%	67%	73%	51%	59%	70%
सूर्य	09/01/2109	73%	55%	31%	98%	73%	47%	15%	31%	52%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

सम
सम
सम
सम
शुभ

क्षेत्र

अल्प बचत
कम खर्च
स्वास्थ्य
पराक्रम हानि
दम्पति



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में है। अतः आप चन्द्र कुंडली से मांगलिक है। चूंकि यह योग भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों तथा चल एवं अचल सम्पत्ति को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे। शारीरिक रूप से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी रुकावटें उत्पन्न होगी परन्तु अन्ततः इस में सफलता मिल ही जाएगी। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा लेकिन इसका दाम्पत्य जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा सुख पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

चतुर्थ भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में भौतिक सुख संसाधनों को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे। इसकी सप्तम भाव पर दृष्टि से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में उग्रता रहेगी लेकिन सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप कार्य क्षेत्र में परिश्रमपूर्वक नित्य उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति हो सकती है तथा समाज से इच्छित मान सम्मान अर्जित करने में भी आपको सफलता मिलेगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अनुकूल रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इसके अतिरिक्त परिश्रम पूर्वक आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी आप समर्थ रहेंगे।

मंगल की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे

पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपको इच्छित मात्रा में सांसारिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति को बनाने में भी आप समर्थ रहेंगे। साथ ही सर्वत्र सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं जीवन में एक दूसरे को सुख तथा सहयोग प्रदान करके आप आत्मिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुंडली में शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्णता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, कोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से

पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भृत्यकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संहि, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराकामी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(08/01/2024 - 08/01/2040)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 08/01/2024 को आरम्भ तथा 08/01/2040 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। इस तरह वह भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। द्वितीय भाव सम्पत्ति, भाग्य, दायीं आँख, स्मरणशक्ति, कल्पना, जिह्वा, दाँत, दाढ़ी और पारिवारिक सदस्यों का द्योतक है। गुरु एक शुभ ग्रह है जो आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है। इसकी छठे, आठवें और दसवें भाव पर दृष्टि है और इन भावों पर इसका शुभ प्रभाव है। अतः 16 वर्षों की यह दशा सुखमय और समृद्धिशाली होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की द्वितीय भाव में स्थिति और वहाँ से (दशम भाव के अतिरिक्त) छठे तथा 8वें भावों अर्थात् रोग और शत्रु के भावों तथा दीर्घायु के भावों पर इसकी दृष्टि के कारण आपको कोई गम्भीर बीमारी नहीं होगी और आप इस दशा के दौरान स्वस्थ रहेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की द्वितीय भाव में स्थिति और दसवें भाव (6ठे तथा 8वें भावों के अतिरिक्त) पर इसकी दृष्टि के कारण इस दशा के दौरान आप चल-अचल सम्पत्ति प्राप्त करेंगे और आराम तथा विलासिता की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु की द्वितीय अर्थात् धन-सम्पत्ति के भाव में स्थिति और वहाँ से (6ठे तथा 8वें भावों के अतिरिक्त) दसवें अर्थात् व्यवसाय तथा जीवन चर्चा के भाव पर इसकी दृष्टि के कारण आप अपने व्यवसाय में प्रतिष्ठित होंगे। आप कवि, महान् लेखक, ज्योतिषी अथवा वैज्ञानिक हो सकते हैं। आप सफल, प्रतिष्ठित और भाग्यशाली होंगे। आप किसी से झगड़ा नहीं करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के कारण आपका पारिवारिक जीवन सुखमय और सद्भावपूर्ण रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी और सहायक होंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी और सुशील होंगे। 16 वर्ष की इस दशा के दौरान आपको कोई पारिवारिक समस्या नहीं होगी और आप पारिवारिक जीवन का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

विज्ञान तथा साहित्य में आपकी रुचि आपको साहित्यकार बनायेगी और आप अपनी इच्छानुसार शिक्षा और सफलता प्राप्त करेंगे।

**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(08/01/2024 - 26/02/2026)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 08/01/2024 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/01/2024 को प्रारंभ होकर 26/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी; धन, संचित होगा। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा। खुशियां मिलेंगी; किस्मत चमकेगी। उत्तम वस्त्र आदि से सुशोभित रहेंगे; सब सुविधाएं होंगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। तंत्र-मंत्र में रुचि ले सकते हैं। अध्यात्म में रुचि होगी। मातहतों और किरायेदारों से लाभ हो सकता है। उत्तम नौकरी मिल सकती है; कार्यालय उत्तम रहेगा। कार्यक्षेत्र में तरक्की होगी, प्रसिद्धि मिलेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित धनलाभ हो सकता है। आपके पिता को शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। माता धनी और सफल बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, खर्च, शत्रुओं पर विजय, अचल संपत्ति की प्राप्ति, धन और उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान सफलता प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे; सरकार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनलाभ उत्तम होगा; भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा; किस्मत चमकेगी। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है; अप्रत्याशित लाभ संभव है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। खानपान पर ध्यान दें, नेत्रों की देखभाल करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीला गुड़, पीले वस्त्र, हल्दी और पुस्तकें दान में दें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शनि
(26/02/2026 - 08/09/2028)**

आपकी बृहस्पति की महादशा 08/01/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 26/02/2026 को प्रारंभ होकर 08/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी के माध्यम से धन का लाभ होगा। वसीयत, विरासत या उपहार द्वारा धनागम हो सकता है। अचानक, अप्रत्याशित धन आ सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि ले सकते हैं। जीवनशैली में कुछ परिवर्तन हो सकता है। आप शक्तिशाली, प्रसिद्ध, साहसी और प्रसन्न होंगे। सम्मान में वृद्धि होगी। सुख-साधन और घरेलू सुख उपलब्ध रहेंगे। निवेश से लाभ हो सकता है। शिशु का जन्म संभव है।

आपके जीवनसाथी की आय में वृद्धि होगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे मगर आय भी अच्छी होगी। माता सुखी और भाग्यशाली रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, सम्मान में वृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; नींव सुदृढ़ होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, सुख-साधन उपलब्ध होंगे; अचल संपत्ति से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो मामूली परिवर्तन हो सकता है, यात्रा होगी, उत्साह उत्तम रहेगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को साझेदारों से लाभ होगा।

गंभीर बीमारियों का ठीक से इलाज करवायें। अरिष्ट से बचाव के लिए मछलियों को भोजन दें।

**अंतर्दशा :- गुरु - बुध
(08/09/2028 - 15/12/2030)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 08/01/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 08/09/2028 को प्रारंभ होकर 15/12/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाजिरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आप बुद्धिमत्तापूर्ण निवेश और कुशल नियोजन से धनी बनेंगे। आपकी विवेकशक्ति उत्तम है। नौजवान लोगों की संगत और आमोद-प्रमोद से खुशियां मिलेंगी। उच्चपद, धनलाभ, उच्चाधिकारियों से सहयोग, सफलता और प्रसन्नता का संकेत है। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी के जीवनस्तर में उत्थान होगा। आपके पिता को मानसिक और घरेलू सुख मिलेगा। माता के नये मित्र बनेंगे, सम्मानित होंगी, संतुष्ट रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए खर्चे, शत्रुओं पर विजय, पर्याप्त मित्र, अचल संपत्ति और माता से उत्तम संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान प्रसिद्ध होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाता धनी और सौभाग्यशाली बनेंगे। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन आ सकता है; अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आंखों और गले के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए गाय को हरा चारा या सब्जियां खिलाएं।